बगीचे के शिकारी

प्रेइंग मैंटिस

ब्लैंका लैविज़, हिंदी: प्रमोद कुमार मेहता



बगीचे के शिकारी

प्रेइंग मैंटिस

ब्लैंका लैविज़, हिंदी: प्रमोद कुमार मेहता





डोना के लिए:

मैंने यह किताब

खास तौर पर तुम्हारे लिए लिखी और फ़ोटो खींची है,

क्योंकि तुम्हें ये बचपन में पसंद थी।



जून की एक गर्म दोपहर में, एक घर के पिछवाड़े (बैक यार्ड) के बगीचे में, एक अंडे का खोल जीवन से भरा हुआ है। प्रेइंग मेंटिस निकल रहे हैं।

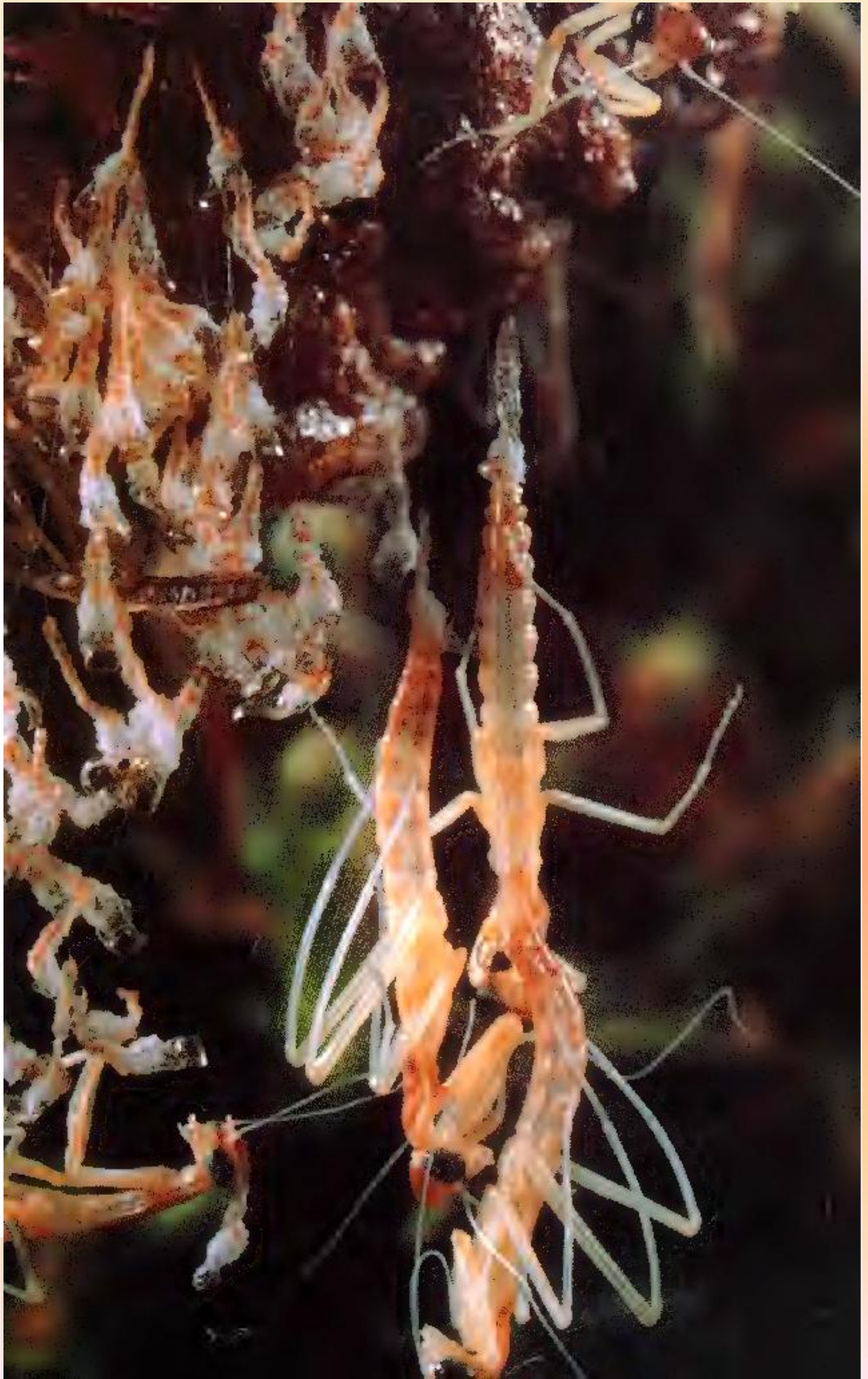
पिछली पतझड़ में, वे खोल के अंदर सिर्फ़ अंडे थे। ठंडी हवाएँ चलीं। बर्फ़ और बारिश हुई। इन सबके बावजूद, अंडे सुरक्षित रहे। और जब गर्म मौसम आया, तो वे बढ़ने लगे।

अब सैकड़ों प्रेइंग मेंटिस खोल के नीचे की दरारों से बाहर निकल रहे हैं।



एक बार बाहर आने के बाद, नए निकले मैंटिस उन पतले थैलों से बाहर निकलते हैं जिन्होंने बड़े होने के दौरान उनकी रक्षा की थी। वे थैलों के बचे हुए हिस्सों से उल्टे लटकते हैं। हालांकि वे मच्छर जितने छोटे होते हैं, लेकिन वे अपनी खाल के लिए पहले से ही बहुत बड़े होते हैं। इसलिए वे उनसे बाहर निकल जाते हैं और नीचे की नई खाल के सख्त होने के लिए लगभग एक घंटे तक इंतजार करते हैं। फिर वे खाने की तलाश में बगीचे में निकल पड़ते हैं।

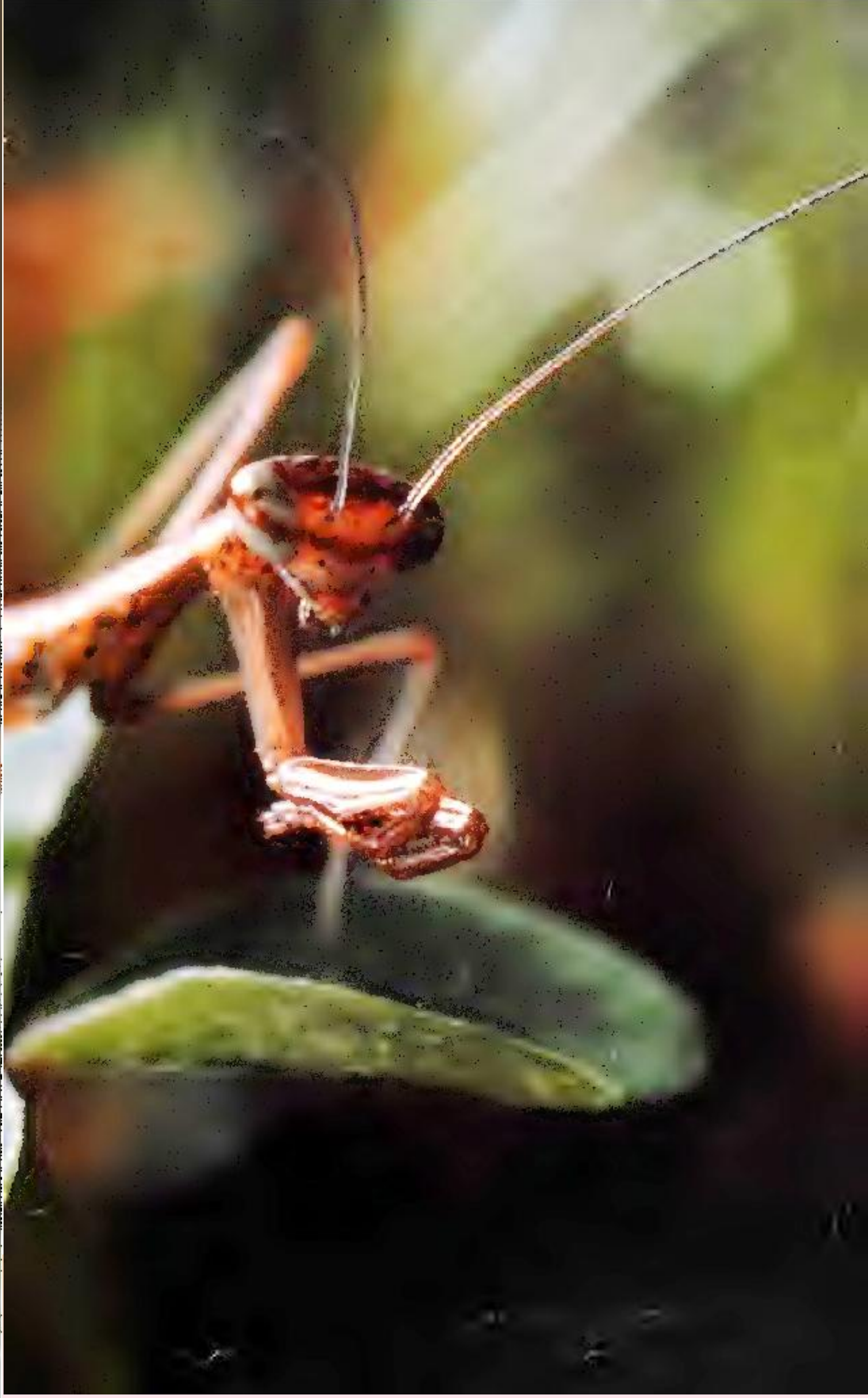
प्रेइंग मैंटिस फूलों से अमृत नहीं चूसते, जैसा कि मधुमक्खियां और तितलियां करती हैं। और न ही वे हरे पौधे खाते हैं, जैसा कि टिड्डे और कुछ भृंग करते हैं। प्रेइंग मैंटिस दूसरे कीड़ों को खाते हैं - ज़िंदा! कुछ ही घंटों में, इनमें से कई छोटे मैंटिस एक-दूसरे को भी खा जाएंगे।



यह मेंटिस, जो कुछ ही घंटे पुराना है, उसे खड़े होने के लिए एक तिपतिया पत्ता मिल गया है। सभी कीड़ों की तरह, इसके भी दो एंटीना और तीन जोड़ी पैर होते हैं। कुछ महीनों में, इसके दो जोड़ी जालीदार पंख निकल आएंगे।

मेंटिस अपने अगले दो पैरों को ऐसे पकड़े रहता है जैसे प्रार्थना कर रहा हो। इसी वजह से इसका यह नाम पड़ा है। लेकिन प्रेइंग मेंटिस प्रार्थना नहीं कर रहा होता। वह बस अपने पैरों को रास्ते से हटाकर रखता है, और किसी छोटे कीड़े के आने का इंतज़ार करता है। फिर वह हाथ बढ़ाकर उस कीड़े को पकड़कर खा लेता है।

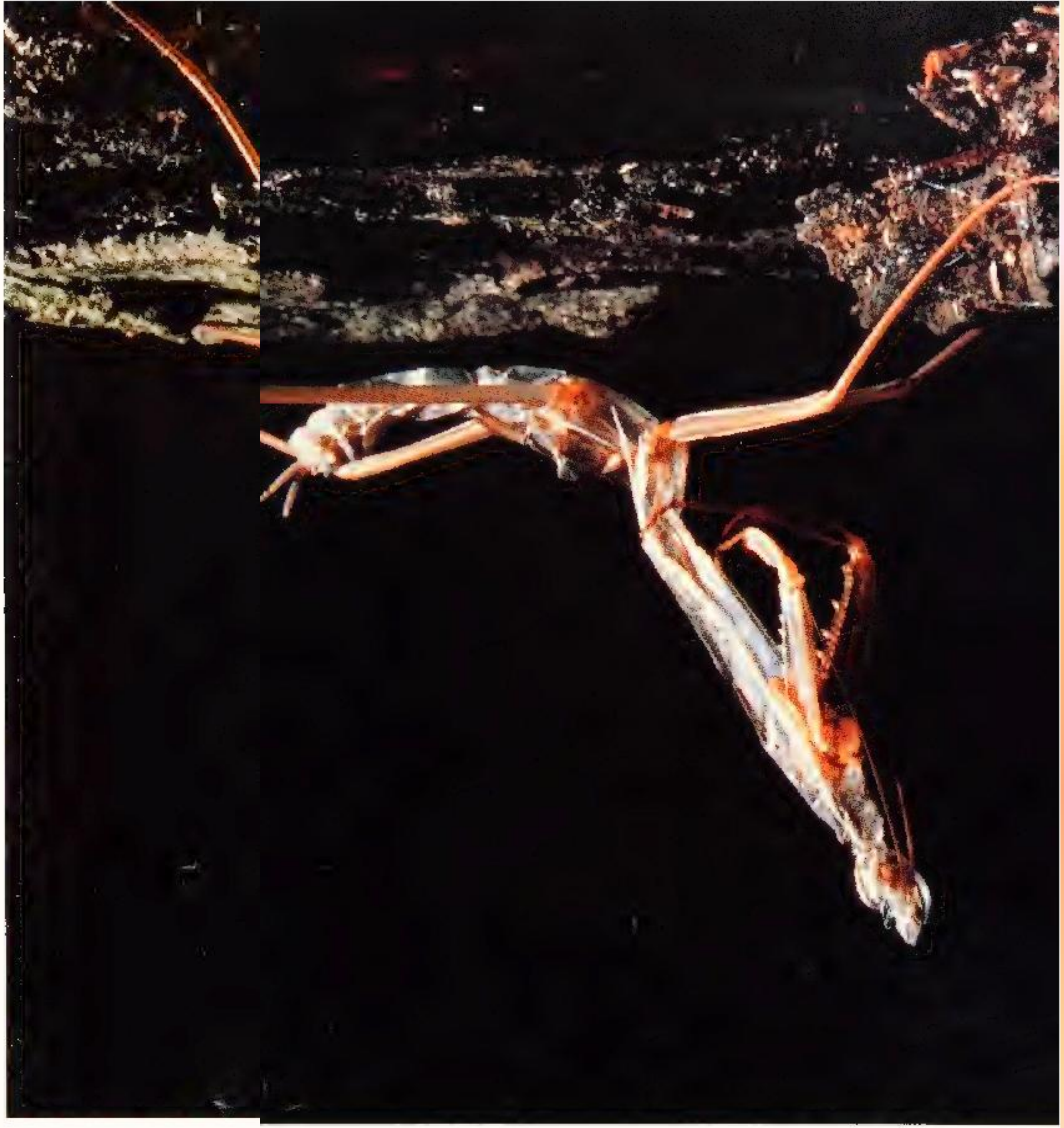




जैसे-जैसे प्रेइंग मेंटिस बड़ा होता है, वह अपनी खाल उतारता है, या मोल्टिंग करता है, एक टहनी या डाल से उल्टा लटककर। यह ऐसा छह से नौ बार करता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह कितना खाता है।

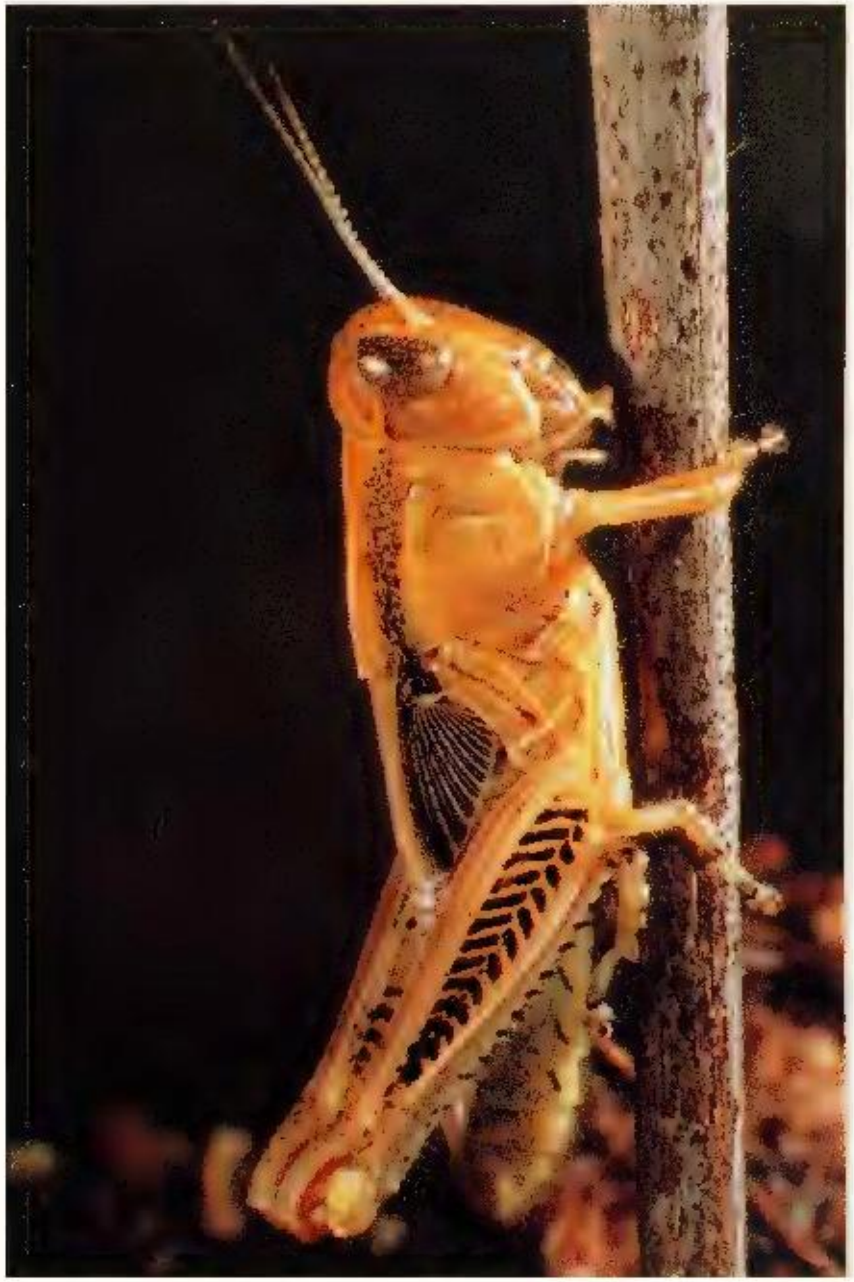
यह एक इंच लंबी खाल एक महीने बाद उतारी गई थी। इसने मेंटिस के पूरे शरीर को ढका हुआ था—पैर, शरीर, यहाँ तक कि उसके सिर पर मौजूद दो एंटीना भी। खाली खाल लगभग असली प्रेइंग मेंटिस जैसी दिखती है।

प्रेइंग मेंटिस की खाल असल में उसका कंकाल होती है। यह मेंटिस को सहारा देती है। अगर आप किसी मेंटिस को उठाएँगे, तो उसकी खाल सख्त, चिकनी और मोम जैसी लगेगी।





जैसे-जैसे प्रेइंग मेंटिस अपनी खाल बदलते हैं, उनका रंग गहरा होकर भूरा या हरा हो जाता है। यह एक महीने पुराना हरा मेंटिस अंगूर की बेल पर चल रहा है। कुछ ही देर में यह अपने अगले पैरों को प्रार्थना करने की मुद्रा में मोड़ लेगा और खाने का इंतज़ार करेगा। लेकिन जो टिड्डा इसे दिख रहा है, वह इसके खाने के लिए बहुत बड़ा है। मेंटिस अभी सिर्फ़ एक इंच लंबा है। जब यह बड़ा और लंबा हो जाएगा, तो यह कई टिड्डे खाएगा।



मैंटिस को कुछ और मिलता है—एक टिड्डे की खाल।

लेकिन खाली खाल सिर्फ़ थोड़ा-सा खाने लायक होती है।





जब कोई छोटी मक्खी पास बैठती है, तो मैंटिस उसे इतनी तेज़ी से झपट लेता है कि आप देख भी नहीं सकते। अब उसके पास खाना है।

हालांकि प्रेइंग मैंटिस चल सकता है, कूद सकता है, और उड़ भी सकता है एक बार जब उसके पंख बन जाते हैं, तो वह अपने खाने के पीछे बगीचे में नहीं भागता। वह चुपचाप बैठा रहता है और इंतज़ार करता है, पत्तियों, घास, और टहनियों के साथ घुलमिल जाता है। कभी-कभी उसे किसी छोटे कीड़े के हमले की रेंज में आने के लिए बहुत देर तक इंतज़ार करना पड़ता है।



अंडे से निकलने के लगभग दो महीने बाद, एक प्रेइंग मैंटिस के पंख निकलने लगते हैं। यह भूरा मैंटिस अब दो इंच लंबा है। इसकी पीठ के बीच में, पंख बनने शुरू हो गए हैं। इसके कांटेदार अगले पैर बड़े और ताकतवर हैं। वे एक हिलते हुए गुफा क्रिकेट को छेद सकते हैं और पकड़ सकते हैं, जबकि मैंटिस उसे खाता है।





खाने के बाद, प्रेइंग मैंटिस खुद को साफ करता है। सबसे पहले यह अपने अगले पैरों के हर हिस्से को साफ करता है। फिर यह अपने सिर के हर हिस्से को साफ करता है, पहले एक अगले पैर से और फिर दूसरे से। यह हर पैर को अपने सिर के चारों ओर, अपने मुंह से, और वापस अपने सिर के ऊपर से चलाता है—कुछ-कुछ बिल्ली की तरह। मैंटिस को अपनी आंखें और एंटीना साफ रखने की ज़रूरत होती है—वे इसे खाना ढूंढने में मदद करते हैं। यह प्रेइंग मैंटिस, और जून में अंडे से निकले बाकी सभी, चीनी मैंटिस हैं। चीनी मैंटिस को लगभग नब्बे साल पहले अमेरिका लाया गया था, शायद नाव से, शायद गलती से। कोई पक्का नहीं जानता।





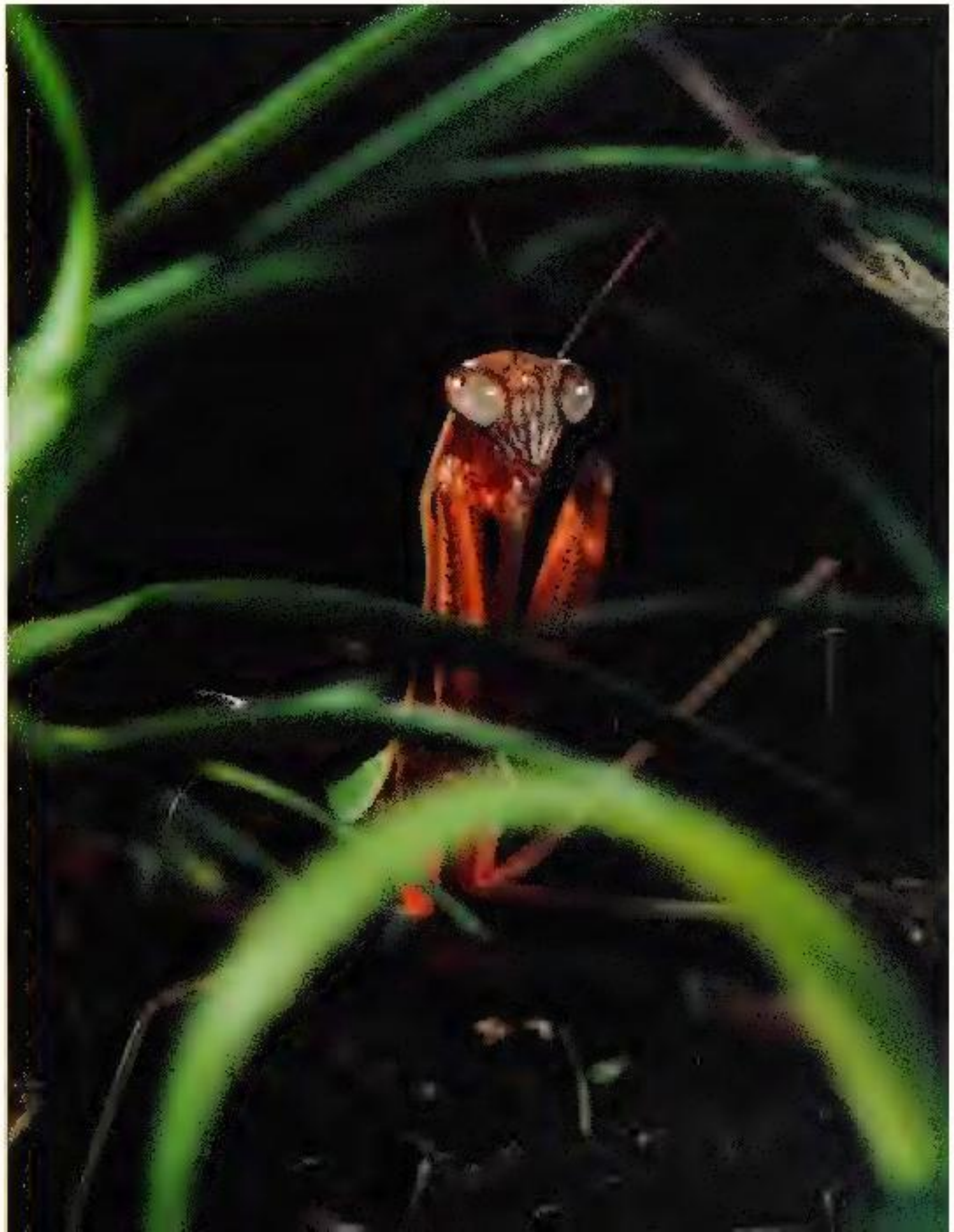




ये दो प्रेइंग मैंटिस कैरोलिना मैंटिस हैं। ये यूनाइटेड स्टेट्स के रहने वाले हैं और चाइनीज़ मैंटिस से छोटे हैं। लाल फूल वाले ने तितली पकड़ ली है। दूसरा अभी भी खाने का इंतज़ार कर रहा है।



सितंबर का महीना है, और यह नर चीनी मैंटिस है। इसने आखिरी बार अपनी स्किन उतारी है। उसके आखिरी मोल्ट में पूरी तरह से बढ़े हुए पंख दिख रहे थे, जो उसकी पीठ पर मुड़े हुए थे। अब वह उड़ सकता है। प्रेइंग मैंटिस दिन, शाम और रात में कीड़ों का शिकार करते हैं। कई कीड़ों का आराम का समय होता है, लेकिन मैंटिस हर समय चौकस रहते हैं।



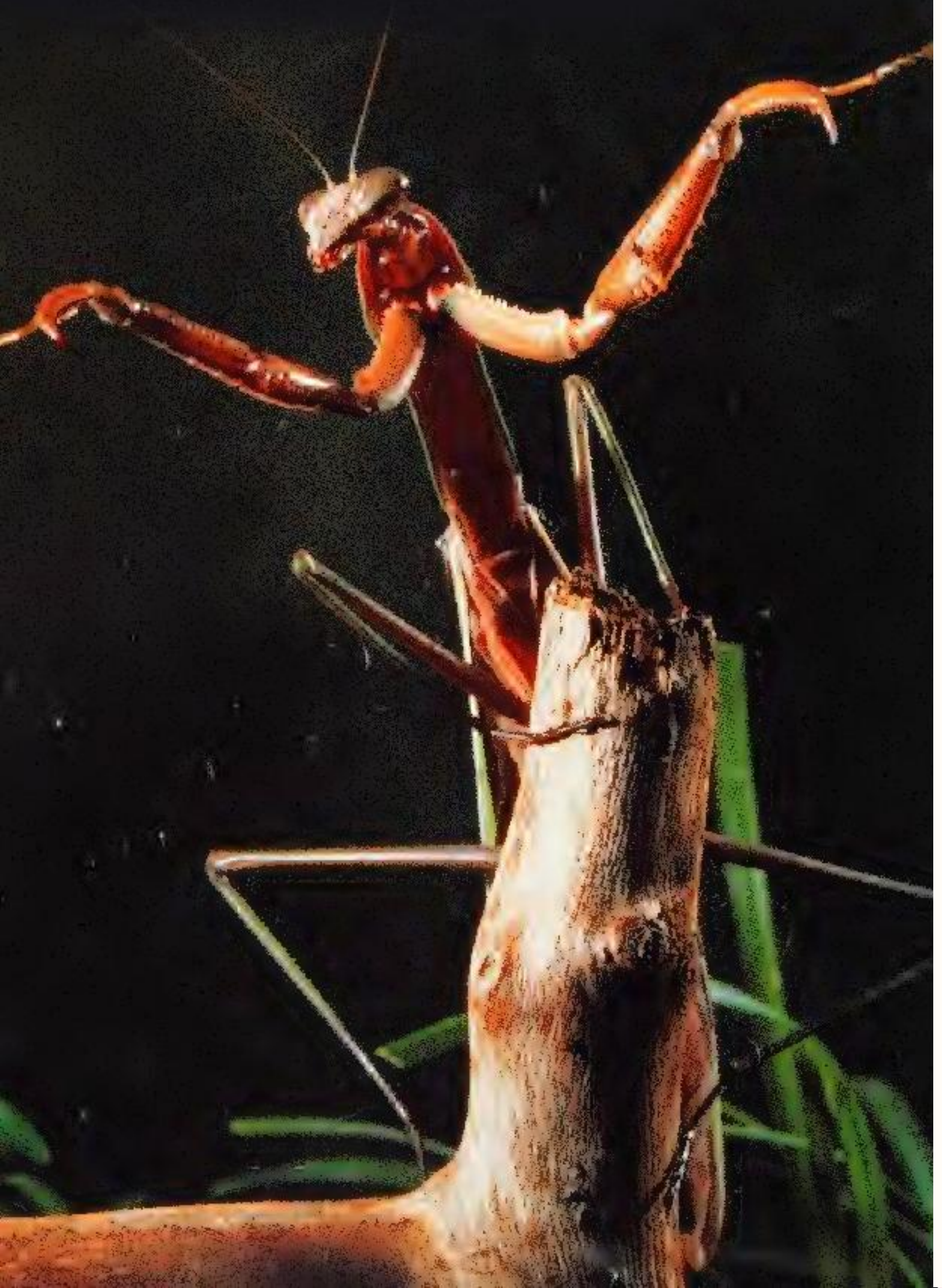
यह मादा भी पूरी तरह बड़ी हो गई है। वह नर से बड़ी है, और उसका पेट अंडों से भरा है। वह पहले अच्छी उड़ती थी, लेकिन अब अंडों की वजह से वह बहुत भारी हो गई है।



जब नर उसे देखता है, तो वह अपने पंख फैलाता है और अपना पेट काटता है। शायद इससे उसका ध्यान आकर्षित होता है।



जैसे ही नर कामेश पास आता है, मादा अपने अगले पैर फैला लेती है। वह ऐसा यह दिखाने के लिए करती है - नर पर वह हमला नहीं करेगी।





नर मादा की पीठ पर चढ़ता है और लगभग पाँच घंटे तक वहीं रहता है। वह उसे स्पर्म डोनेट करता है, जिसे वह अपने शरीर के अंदर एक खास जगह पर स्टोर करती है। जब मेटिंग खत्म हो जाती है, तो नर अचानक उड़कर दूर चला जाता है। शायद यह बड़ी छलांग यह पक्का करती है कि मादा उसे नहीं खाएगी। मादा मैंटिस अपने साथियों को तब खा जाती हैं जब उन्हें लंबे समय से कुछ नहीं मिला होता।







लगभग नौ दिन बाद, मादा अपना पहला अंडे का डिब्बा बनाती है। वह एक टहनी पर उल्टी लटकती है, और उसके शरीर के सिरे से झाग बहता है। काम करते समय उसका पेट गोल-गोल घूमता है। जब वह झाग में अंडे देती है, तो वह उन्हें कुछ जमा किए गए स्पर्म से ढक देती है। जब यह खत्म हो जाता है, तो अंडे का डिब्बा लगभग अखरोट के आकार का होता है। छोटी मक्खियाँ इसकी जाँच करती हैं। नरम चिपचिपा झाग जल्द ही सख्त हो जाता है। कई दिनों के बाद, यह सफेद से गहरा भूरा हो जाता है। मादा बाकी जमा किए गए स्पर्म से कई और अंडे के डिब्बे बनाएगी, और वह फिर से मेटिंग कर सकती है।

जैसे-जैसे दिन छोटे और ठंडे होते जा रहे हैं, प्रेइंग मैंटिस के खाने के लिए कीड़े कम होते जा रहे हैं। वह ज़्यादा दिन नहीं जिएगी। लेकिन उसके अंडे बच जाएँगे। बर्फ़, हवा और बारिश में, सर्दी और बसंत में, वे बगीचे में टहनियों पर लटके रहेंगे, और अंदर के अंडों की रक्षा करेंगे। और जून में, जब गर्मी आएगी और दिन गर्म होंगे, तो पिछवाड़े के शिकारी फिर से अंडे से निकलेंगे।

